Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सप्रयोग महाविद्या स्तोत्रम्

भाषा टीका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सप्रयोग-महाविद्यास्तोत्रम्

भाषा टीका सहितम्

इस पुस्तक में महाविद्या स्तोत्र, महाविद्या कवच, कुछ अनुभूत मंत्र आदि दिये गये हैं।

पूजा-पाठ व ज्योतिष पुस्तकों के लिए
मूल नाथ पुस्तक भण्डार
194, दरीबा कलां, दिल्ली-6, दूरभाष 23275344

सम्पादन : पं० शिवस्वरूप यज्ञिक जी

मूल्य-15/-

प्रकाशक:
बी०एस० प्रमिन्दर
प्रकाशन, दिल्ली-51

मुख्य वितरक:
कर्मसिंह अमरसिंह, पुस्तक विक्रेता
बड़ा बाजार हरिद्वार-249401

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री गणेशाय नमः

सप्रयोग-महाविद्यास्तोत्रम्

भाषाटीकासहितम्

महाविद्यां प्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मिताम्।
उत्तमां सर्वविद्यानां सर्वभूतघशङ्करीम्॥

संकल्पः-ॐ तत्सदद्याऽमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं मम (अथवा-ऽमुकयजमानस्य) गृहे उत्पन्न-भूत-प्रेत- पिशाचादि-सकलदोष-शमनार्थं झटित्यारोग्यताप्राप्त्यर्थं च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाविद्यास्तोत्रस्य पाठं करिष्ये।

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीमहाविद्यास्तोत्रमन्त्रस्याऽर्यमा ऋषिः, कालिका देवता, गायत्री छन्दः, श्रीसदाशिव-देवताप्रीत्यर्थे मनोवाञ्छितसिद्ध्यर्थे च जपे (पाठे) विनियोगः।

भगवान् शंकर द्वारा निर्मित उस महाविद्या को मैं कहता हूँ, जो सब विद्याओं में श्रेष्ठ तथा सब जीवों को वश में करने वाली है। पाठकर्त्ता दाहिने हाथ में पुष्प, अक्षत्, जल लेकर 'ॐ तत्सदद्याऽमुकमासे0' से 'पाठं करिष्ये' तक पढ़कर पाठ का संकल्प करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यानम्

उद्यच्छीतांशु-रश्मि-द्युतिचय-सदृशीं फुल्लपद्मोपविष्टां
वीणा-नागेन्द्र-शंखा-ऽऽयुध-परशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः।
मुक्ताहारांशु-नाना-मणियुत-हृदयां सीधुपात्रं वहन्तीं
वन्देऽभीज्यां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम्॥

पश्चात् 'ॐ' अस्य श्रीमहाविद्यास्तोत्रमन्त्रस्य0 से 'विनियोगः' तक पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दें।

उसके बाद 'डद्यच्छीतांशु0' से 'साधकेष्टप्रदात्रीम्' तक श्लोक पढ़कर महाविद्या का ध्यान कर, 'ॐ कुलकरीं गोत्रकरीं0' से आरम्भ कर, 'प्रेतशान्तिर्विशेषतः' तक स्तोत्र का पाठ करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ कुलकरीं गोत्रकरीं धनकरीं पुष्टिकरीं वृद्धिकरीं हलाकरीं सर्वशत्रुक्षयकरीम् उत्साहकरीं बलवर्द्धिनीं सर्ववज्रकायाचितां सर्वग्रहोच्चाटिनीं पुत्रपौत्राऽभिवर्द्धि-नीमायुरारोग्यैश्वर्याभिवर्द्धिनीं सर्वभूतस्तम्भिनीं द्राविणीं मोहिनीं सर्वाकर्षिणीं सर्वलोकवशंकरीं सर्वराजवशंकरीं सर्वयन्त्र-मन्त्र-प्रभेदिनीमेकाहिकं द्व्याहिंक त्र्याहिंक चातुर्थिकं पाञ्चाह्निकं साप्ताहिकामार्द्धमासिकं मासिकं चातुर्मासिकं षाण्मासिकं सांवत्सरिकं वैजयन्तिकं पैत्तिकं वातिकं श्लैष्मिकं सान्निपात्तिकं कुष्ठरोगजठररोग-मुखरोगगण्डरोगप्रमेहरोगशुल्काविशिक्षयकरीं विस्फोट-कादि-विनाशनाय स्वाहा। ॐ वेतालादिज्वर-रात्रिज्वर-दिवसज्वरा-ऽग्निज्वर-प्रत्यग्निज्वर-राक्षसज्वर-पिशाचज्वर-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मराक्षसज्वर-प्रस्वेदज्वर-विषमज्वर-त्रिपुरज्वर-माया-ज्वरऽऽभि- चारिकज्वर-वष्टिज्वर-स्मरादिज्वर- दृष्टि-ज्वर-प्रोगादि-विनाशनाय स्वाहा। सर्वव्याधि-विनाशनाय स्वाहा। सर्वशत्रुविनाशनाय स्वाहा।

ॐ अक्षिशूल-कुक्षिशूल-कर्णशूल-कर्णशूल-घ्राण-शूलोदरशूल-गलशूल-गण्डशूल-दन्तशूल-पादशूल-पादा-र्द्धशूल-सर्वशूल-विनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वव्याधि-विनाशनाय स्वाहा। ॐ सर्वशत्रुविनाशनाय स्वाहा। सर्वस्फोटक-सर्वक्लेशविनाशनाय स्वाहा। ॐ आत्मरक्षा ॐ परमात्मरक्षा मित्ररक्षाऽग्निरक्षा प्रत्यग्निरक्षा परगति-वातोरक्षा तेषां सकलबन्धाय स्वाहा। ॐ हरदेहिनी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा। ॐ इन्द्रदेहिनी स्वाहा। ॐ स्वस्य ब्रह्मदण्डं विश्रामय। ॐ विश्रामय विष्णुदण्डम्। ॐ ज्वर-ज्वरेश्वर-कुमारदण्डम्। ॐ हिलि मिलि मायादण्डम्। ॐ नित्यं नित्यं विश्रामय वारुणी शूलिनी गारुडी रक्षा स्वाहा।

गंगादिपुलिने जाता पर्वते च वनान्तरे।
रुद्रस्य हृदये जाता विद्याऽहं कामरूपिणी॥

ॐ ज्वल ज्वल देहस्य देहेन सकललोहपिंगिलि कटि मपुरी किलि किलि किलि महादण्ड कुमारदण्ड नृत्य नृत्य विष्णुवन्दितहंसिनी शंखिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनी रक्ष रक्ष स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ बीजमन्त्राः

ॐ ह्राँ स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्राँ स्वाहा। ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रीं स्वाहा। ॐ ह्रूँ स्वाहा। ॐ ह्रूँ ह्रूँ स्वाहा।
ॐ ह्रें स्वाहा। ॐ ह्रें ह्रें स्वाहा। ॐ ह्रैं स्वाहा।
ॐ ह्रैं ह्रैं स्वाहा। ॐ ह्रों स्वाहा। ॐ ह्रों ह्रों स्वाहा।
ॐ ह्रौं स्वाहा। ॐ ह्रौं ह्रौं स्वाहा। ॐ ह्रँ स्वाहा।
ॐ ह्रँ ह्रँ स्वाहा। ॐ ह्रः स्वाहा। ॐ ह्रः ह्रः स्वाहा।
ॐ क्राँ स्वाहा। ॐ क्राँ क्राँ स्वाहा। ॐ क्रीं स्वाहा।
ॐ क्रीं क्री स्वाहा। ॐ क्रूँ स्वाहा। ॐ क्रूँ क्रूँ स्वाहा।
ॐ क्रें स्वाहा। ॐ क्रें क्रें स्वाहा। ॐ क्रैं स्वाहा।
ॐ क्रैं क्रैं स्वाहा। ॐ क्रों स्वाहा। ॐ क्रों क्रों स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ क्रौं स्वाहा। ॐ क्रौं क्रौं स्वाहा। ॐ क्रँ स्वाहा।
ॐ क्रँ क्रँ स्वाहा। ॐ क्रः स्वाहा। ॐ क्रः क्रः स्वाहा।
ॐ कँ स्वाहा। ॐ कँ कँ स्वाहा। ॐ खँ स्वाहा।
ॐ खँ खँ स्वाहा। ॐ गँ स्वाहा। ॐ गँ गँ स्वाहा।
ॐ घँ स्वाहा। ॐ घँ घँ स्वाहा। ॐ ङँ स्वाहा।
ॐ ङँ ङँ स्वाहा। ॐ चँ स्वाहा। ॐ चँ चँ स्वाहा।
ॐ छँ स्वाहा। ॐ छँ छँ स्वाहा। ॐ जँ स्वाहा।
ॐ जँ जँ स्वाहा। ॐ झँ स्वाहा। ॐ झँ झँ स्वाहा।
ॐ ञँ स्वाहा। ॐ ञँ ञँ स्वाहा। ॐ टँ स्वाहा।
ॐ टँ टँ स्वाहा। ॐ ठँ स्वाहा। ॐ ठँ ठँ स्वाहा।
ॐ डँ स्वाहा। ॐ डँ डँ स्वाहा। ॐ ढँ स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ ढँ ढँ स्वाहा। ॐ णँ स्वाहा। ॐ णँ णँ स्वाहा।
ॐ तँ स्वाहा। ॐ तँ तँ स्वाहा। ॐ थँ स्वाहा।
ॐ थँ थँ स्वाहा। ॐ दँ स्वाहा। ॐ दँ दँ स्वाहा।
ॐ धँ स्वाहा। ॐ धँ धँ स्वाहा। ॐ नँ स्वाहा।
ॐ नँ नँ स्वाहा। ॐ पँ स्वाहा। ॐ पँ पँ स्वाहा।
ॐ फँ स्वाहा। ॐ फँ फँ स्वाहा। ॐ बँ स्वाहा।
ॐ बँ बँ स्वाहा। ॐ भँ स्वाहा। ॐ भँ भँ स्वाहा।
ॐ मँ स्वाहा। ॐ मँ मँ स्वाहा। ॐ यँ स्वाहा।
ॐ यँ यँ स्वाहा। ॐ रँ स्वाहा। ॐ रँ रँ स्वाहा।
ॐ लँ स्वाहा। ॐ लँ लँ स्वाहा। ॐ वँ स्वाहा।
ॐ वँ वँ स्वाहा। ॐ शँ स्वाहा। ॐ शँ शँ स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ षँ स्वाहा। ॐ षँ षँ स्वाहा। ॐ सँ स्वाहा। ॐ सँ सँ स्वाहा। ॐ हँ स्वाहा। ॐ हँ हँ स्वाहा। ॐ क्षँ स्वाहा। ॐ क्षँ क्षँ स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ लेषाय स्वाहा। ॐ गणेश्वराय स्वाहा।

ॐ दुर्गे महाशक्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-सर्ववेताल-वृश्चिकादिभय-विनाशनाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रौं क्रँ क्रः स्वाहा। ॐ ब्रं ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ विं विष्णवे स्वाहा। ॐ शीं शिवाय स्वाहा। ॐ सूं सूर्याय स्वाहा। ॐ सों सोमाय स्वाहा। ॐ विं विष्णवे स्वाहा। ॐ शीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिवाय स्वाहा। ॐ सूं सूर्याय स्वाहा। ॐ सों सोमाय स्वाहा। ॐ मँ मंगलाय स्वाहा। ॐ बुं बुधाय स्वाहा। ॐ बृँ बृहस्पतये स्वाहा। ॐ शुं शुक्राय स्वाहा। ॐ शं शनैश्चयराय स्वाहा। ॐ रां राहवे स्वाहा। ॐ कें केतवे स्वाहा। ॐ महाशान्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-वेताल, वृश्चिकभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ सिंह- शार्दूल-गजेन्द्र- ग्राह-व्याघ्रादिमृगानबध्नामि स्वाहा। ॐ शस्त्रं बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्रं बध्नामि स्वाहा। ॐ वायुं बध्नामि स्वाहा। ॐ गतिं बध्नामि स्वाहा। ॐ आशां बध्नामि स्वाहा। ॐ सर्व बध्नामि स्वाहा। ॐ सर्वजन्तुं-बध्नामि स्वाहा। ॐ बन्ध बन्ध मोचनं कुरु कुरु स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिग्बन्धनम्

ॐ नमो भगवते रुद्राय महेन्द्रदिशायामैरावतारूढं हेमवर्णं वज्रहस्तं परिवारसहितम् इन्द्रदेवताधिपतिमैनद्रमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ ऐन्द्रमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्निदिशायां मार्जारारूढं शक्तिहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिमग्निनमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ अग्निमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायैः नमः स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय दक्षिणदिशायां महिषारूढं कृष्णवर्ण दण्डहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपति यमण्मडलं बध्नामि स्वाहा। ॐ यममण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा। ॐ नैर्ऋत्यदिशायां प्रेतारूढं षड्गहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं नैर्ऋत्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ नैर्ऋत्यमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हाँ हीं हूँ हैं हौं हः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ पश्चिमदिशायां मकरारूढं पाशहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं वरुणमण्डलं बध्नामि स्वाहा।

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

स्वाहा। ॐ वरुमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ वायव्यदिशायां मृगारूढं धनुर्हस्त परिवारसहितं दिग्देवता-धिपतिं वायव्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ भैरवाय स्वाहा। ॐ नो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा। ॐ वायव्यमंडल बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रै ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ उत्तरदिशायां यक्षारूढं मदाहस्तं परिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं कुबेरमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा। ॐ कुबेरमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ हाँ हीं हूँ हैं हौं हः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा ॐ अग्निदिशायां कूर्मारूढं लोष्ठभागं कुपरिघहस्तं स्वपरिवारसहितं दिग्देवताधिपतिं पातालमण्डलं बध्नामि स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ भैरवाय स्वाहा। ॐ गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा। ॐ पातालमण्डलं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष माचल माचल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा। ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैं क्रौं क्रः स्वाहा। ॐ दुर्गे महाशान्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-वेताल-वृश्चकादिभयविनाशनाय स्वाहा। ॐ पूर्वदिशायां व्रजको नाम राक्षसस्तस्य व्रजकस्याऽष्टादशकोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा।

ॐ अग्निदिशायामग्निज्वालो नाम राक्षसस्तस्याऽग्नि ज्वालस्याऽष्टादशकोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ दक्षिणादिशाया-मेकपिङ्गलिको नाम राक्षसस्तस्यैकपिङ्गलिक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्याऽष्टादशकोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ नैर्ऋत्यदिशायां मरीचिको नाम राक्षसस्तस्य मरीचिकस्याऽष्टादशकोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ पश्चिमदिशायां मकरो नाम राक्षसस्तस्य मकरस्याऽष्टादशकोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ वायव्यदिशायां तक्षको नाम राक्षसस्तस्य तक्षकस्याऽष्टादशकोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ उत्तरदिशायां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाभीमो नाम राक्षसस्तस्य भीमस्याऽष्टादशकोटि-सहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ ईशानदिशायां भैरवो नाम राक्षसस्तस्य भैरवस्याऽ-ष्टादश-कोटिसहस्त्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा। ॐ अधः दिशायां पातालनिवासिनो नाम राक्षसस्तस्याऽष्टादशकोटिसहस्त्रस्य तस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ ब्रह्मदिशायां ब्रह्मरूपो नाम राक्षसस्तस्य ब्रह्मरूपस्याऽष्टादशकोटि-सहस्त्रय पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा। ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ नमो भगवे रुद्राय स्वाहा। ॐ नमो भगवते भैरवाय स्वाहा। ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा। ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा। ॐ नमो महाशान्तिक-भूत-प्रेत- पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-वेताल-विृश्चकभय-विनाशनाय स्वाहा। ॐ शिखायां मे क्लीं ब्रह्माणी रक्षतुं।। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुँ फट् स्वाहा। ॐ शिरो मे रक्षतु माहेश्वरी। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुँ फट् स्वाहा। ॐ भुजौ रक्षतु सर्वाणी। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुँ फट् स्वाहा। ॐ उदरे रक्षतु रुद्राणी। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुँ फट् स्वाहा। ॐ जङ्घे रक्षतु नारसिंही। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुँ फट् स्वाहा। ॐ पादौ रक्षतु महालक्ष्मी। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुँ फट् स्वाहा। ॐ सर्वाङ्गे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रक्षतु सुन्दरी। ॐ ह्रां ह्रीं व्रीं ब्लीं क्षौं हुँ फट् स्वाहा।
परिणामे महाविद्या महादेवस्य सन्निधौ।
एकविंशतिवारं च पठित्वा सिद्धिमाप्नुयात्॥१॥
स्त्रियो वा पुरुषो वाऽपि पापं भस्म समाचरेत्।
दुष्टानां मारणं चैव सर्वग्रहनिवारणम्।
सर्वकार्येषुः सिद्धिः स्यात् प्रेतशान्तिर्विशेषतः॥२॥

इति श्रीभैरवीतन्त्रे शिवप्रोक्ता महाविद्या समाप्ता।

अथाऽस्य स्तोत्रस्योत्कीलनमन्त्र :-

ॐ उग्रं वीरं महाविष्णु ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्यं नमाक्यहम्॥

अघ्टोत्तरशतमभिमन्त्रय जलं पाययेत् अथवा कुशैर्माजैयेत्।

इति सप्रयोग-महाविद्यास्तोत्रं समाप्तम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महादेव के समीप में इस महाविद्यास्तोत्र के इक्कीस बार पाठ करने से सिद्धि प्राप्त होती है।।१।। चाहे वह स्त्री हो या पुरुष उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। दुष्टों का मारण तथा सब ग्रहों की शान्ति भी होती है। और सभी कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है। विशेष करके प्रेतबाधा की शान्ति निश्चित रूप से होती है।।२।। इस प्रकार श्री भैरवी तन्त्र में भगवान् शंकर से कही गयी महाविद्या समाप्त हुई।

इस स्तोत्र का उत्कीलन मन्त्र है-ॐ 'उग्रं वीरं0' से 'नमाम्यहम्' तक। इस मन्त्र से एक सौ आठ बार जल को अभिमन्त्रित कर पिलाना चाहिए अथवा कुश से मार्जन करे।

।। सप्रयोग-महाविद्यास्तोत्र समाप्त ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाविद्यास्तोत्रम्

महाविद्या का मूल मन्त्र

हुँ श्रीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं।

महाविद्याध्यानम्

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्।
महाभीमां करालास्यां सिद्धिविद्याधरैर्युताम्।१॥

नागरराज की यज्ञोपवीत धारण की हुई, महा भयंकर स्वरूप विकराल मुखवाली, सिद्ध एवं विद्याधरों से घिरी हुई॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम्।
एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥२॥

शिव उवाच

दुर्लभं तारिणीमार्गं दुर्लभं तारिणीपदम्।
मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं दुर्लभं शवसाधनम्॥१॥

मुण्डमाला धारण की हुई), बिखरे हुए केशवाली, मन्द हास्ययुक्त चार भुजावाली श्रीमहादेवी का, समस्त कामना की सिद्धि के लिए ध्यान करें॥२॥

शिवजी बोले-हे पार्वति! भवसागर पार उतारने वाला मार्ग एवं स्थान, तत्परक चैतन्य मन्त्र और मन्त्रार्थ तथा शव-साधन ये इस संसार में अत्यन्त दुर्लभ हैं॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्मशान-साधनं योनिसाधनं ब्रह्मसाधनम्।
क्रियासाधनकं भक्तिसाधनं मुक्तिसाधनम्।
तव प्रसादाद् देवेशि! सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः॥२॥
नमस्ते चण्डिके चण्डि! चण्ड-मुण्ड-विनाशिनि!।
नमस्ते कालिके! कालमहाभयविनाशिनि!॥३॥

हे देवेशि! श्मशान-साधन, योनि-साधन, ब्रह्म-साधन, क्रिया-साधन, भक्ति-साधन एवं मुक्ति-साधन आदि सभी सिद्धियाँ आपकी कृपा से ही सिद्ध होती हैं॥२॥

चण्ड-मुण्ड को नष्ट करने वाली चण्डी रूप चण्डिके! आपको नमस्कार है तथा काल के महाभय को विनाश करने वाली कालिके! आपको प्रणाम है॥३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिवे रक्ष जगद्धात्रि! प्रसीद हरवल्लभे!।
प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम्।।४।।
जगत्-क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टि-विधायिनीम्।
करालां विकटां घोरां मुण्डमाला-विभूषिताम्।।५।।

हे जगद्धात्रि-शिवे! आप मेरी रक्षा करें। हे शिवप्रिये! आप मुझ पर प्रसन्न हों। तीनों लोकों को पवित्र करने वाली, संसार की माता को प्रणाम करता हूँ।।४।।

जगत् में क्षोभ (दुःख) उत्पन्न करने वाली, संसार की उत्पत्तिकारिका, कराल, विकट, घोर, मुण्डमाला से विभूषित ऐसी विद्या है।।५।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम्।
गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालङ्कारभूषिताम्।
हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्॥६॥
सिद्धां सिद्धेश्वरी सिद्ध-विद्याधरगणैर्युताम्।
मन्त्रसिद्धप्रदां योनिसिद्धिदां लिङ्गशोभिताम्।
प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गति-नाशिनीम्॥७॥

शिवप्रिया, महेश्वर-द्वारा पूजित, गुरुप्रिया, गौर वणवाली, अत्यन्त सुन्दरी, नाना पकार के अलंकारों से विभूषित, गौरी को मैं नमस्कार करता हूँ। एवं चार मुखवाले ब्रह्मा द्वारा पूजित, हरिप्रिया महामाया को मैं प्रणाम करता हूँ॥६॥सिद्धरूपा, सिद्धेश्वरी, सिद्ध-विद्याधरों से घिरी हुई, मन्त्रसिद्धि एवं योनिसिद्धि दुर्गति प्रदायिनी, लिंग्र से सुशोभित, दुगति विनाशिनी महामाया दुर्गा को मैं प्रणाम करता हूँ॥७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उग्रामुग्रमयीमुग्र-तारामुग्रगणैर्युताम् ।
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्॥८॥
श्यामाङ्गी श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम्।
प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्वार्थसाधिनीम्॥९॥

उग्रगणों से युक्त, उग्रमयी, अति भयंकर रूप, ऐसी उग्र तारा देवी को मैं प्रणाम करता हूँ। कृष्ण वर्णवाले, मेघ के समान श्याम एवं नील स्वरूप वाली नील सुन्दरी देवी को मैं नमस्कार करता हूँ॥८॥ श्यामाङ्गी, अत्यन्त कृष्ण वर्ण वाली, श्यामस्वरूपा, सभी मनोरथों को सिद्ध करने वाली, जगत् की माता गौरी देवी को मैं प्रणाम करता हूँ॥९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्।
आद्यामाद्या-गुरोराद्यामाद्यनाथ-प्रपूजिताम्॥१०॥
श्रीदुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्।
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखर-वल्लभाम्॥११॥

महाघोररूपा, अत्यन्त विकट (भयंकर), घोर शब्द करने वाली, आद्यनाथ (शिव) से पूजित, आशुतोष भगवान् शंकर की गुरुरूपा, श्रीदुर्गा रूपा, आद्या देवी को मैं पुनः पुनः प्रणाम करता हूँ॥१०॥ धनप्रदायिनी कमल से उत्पन्न जगन्माता, चन्द्रशेखर (शिव) प्रिया, अन्नपूर्णा को मेरा बार-बार नमस्कार है॥११॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रिपुरासुन्दरीं बालामबलागण-भूषिताम्।
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्॥१२॥
सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागण-विभूषिताम्।
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्म-विष्णु-हरप्रियाम्॥१३॥

अबला गणों से विभूषित, बाला त्रिपुरसुन्दरी को प्रणाम करता हूँ-शिव द्वारा पूजित, शंकर की एकमात्र ध्येयरूपा, सनातनी॥१२॥ समस्त शिवागणों से विभूषित, भवतारिणी, अत्यन्त सुन्दरी, शिवदूती को मैं प्रणाम करता हूँ। विष्णु की पूज्यरूपा, ब्रह्मा-विष्णु-महेश की प्रिया॥१३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यगुणवर्जिताम्।
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्वसिद्धिदाम्॥१४॥
दिव्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्।
महेशभक्तां माहेशीं महाकाल-प्रपूजिताम्।
प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुर-विमर्दिनीम्॥१५॥

सभी सिद्धियों को देने वाली, अनित्य गुणों से रहित, सर्वदा नित्यरूप तथा सगुण-निर्गुणरूप, समस्त देवों द्वारा ध्येय एवं पूजित नारायणी देवी को मैं प्रणाम करता हूँ॥१४॥

सिद्धिप्रदान करने वाली, शिव की अत्यन्त प्रिय, महाकाल द्वारा पूजित, माहेशी रूप, शुम्भासुरनाशिनी, लोकमाता, दिव्य विद्यारूप महाविद्या को प्रणाम करता हूँ॥१५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीज-विमर्दिनीम्।
भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम्॥१६॥
चतुर्भजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम्।
त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्॥१७॥

लपलपाती जिह्वा वाली, सुरेश्वरी, रक्तप्रिया, लालरंगवाली, रक्तबीज नामक असुर को नष्ट करने वाली, भुवनेशी देवी भैरवी को मैं नमस्कार करता हूँ॥१६॥

चार, दश, एवं अठारह भुजावाली, अपने भक्तों को शुभ फल देने वाली, विश्वेश्वरी, शिवा, विश्वनाथप्रिया, त्रिपुरेशी को मैं प्रणाम करता हूँ॥१७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अट्टाहासमट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्।
कमलां छिन्नभालां च मातङ्गी सुरसुन्दरीम्॥१८॥
षोडशीं विजयां भीमां धूम्रां च बगलामुखीम्।
सर्वसिद्धिप्रदां सर्व-विद्यामन्त्र-विशोधिनीम्।
प्रणमामि जगत्तारां सारां च मन्त्रसिद्धये॥१९॥

धूम्रासुर दैत्य का विनाश करने वाली, अट्टाहासप्रिय, छिन्नमस्ता, मातङ्गी, सुरसुन्दरी॥१८॥ षोडशी, विजया, भीष्म, धूमा, बगलामुखी, समस्त, विद्या मंत्रों की सिद्धि प्रदान करने वाली, मन्त्रसिद्धि के लिए संसार की सारभूत तारा आदि देवियों को मैं प्रणाम करता हूँ॥१९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इत्येवं च वरारोहं स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्।
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि!॥२०॥
कुजवारे चतुर्दश्याममायां जीववासरे।
शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षमाप्नुयात्।
त्रिपक्षे मन्त्रसिद्धिः स्यात् स्तोत्रपाठाद्धि शङ्करि!॥२१॥

फलश्रुति- हे गिरिनन्दिनी पार्वती! जो साधकगण, परम सिद्धि प्रदायक इस महाविद्या स्तोत्र का पाठ करते हैं, वे निश्चय ही परमपद (मोक्ष) को प्राप्त कर लेते हैं॥२०॥

जो सिद्धि-साधक चतुर्दशी, मंगलवार, अमावस्या, गुरुवार और शुक्रवार की रात्रि में पाठ करते हैं, वे निश्चय ही मोक्ष पद को प्राप्त करते हैं। हे शंकरि, तीन पक्ष में इस स्तोत्र के पाठ से निश्चय ही मन्त्र सिद्धि होती है॥२१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चर्तुश्यां निशाभागे शनि-भौमदिने तथा।
निशामुखे पठेत् स्तोत्रं मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात्॥२२॥
केवलं स्तोत्रपाठाद्धि मन्त्रसिद्धिरनुत्तमा।
जागर्ति सततं चण्डी स्तोत्रपाठाद् भुजंगिनी॥२३॥

चतुर्दशी के मध्य रात्रि में तथा शनि एवं मंगलवार के सायंकाल में पाठ करने से निश्चय ही मन्त्रसिद्धि होती है॥२२॥

केवल इस महाविद्या स्तोत्र के पाठ मात्र से ही भली-भांति मन्त्रसिद्धि होती है। तथा भुजंगिनी एवं चण्डी रूप दशमहाविद्या के स्तोत्र-पाठ से मन्त्र जागृत होता है॥२३॥

॥ इति श्री मुण्डमालातन्त्रोक्त महाविद्यास्तोत्र समाप्त ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाविद्याकवचम्

भैरव उवाच

श्रृणु देवि! प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम्।
आद्याया महाविद्यायाः सर्वाभीष्ट-फलप्रदम्॥१॥
कवचस्य ऋषिर्देवि! सदाशिव इतीरितः।
छन्दोऽनुष्टुब् देवता च महाविद्या प्रकीर्तिता।
धर्मा-ऽर्थ-काम-मोक्षाणं विनियोगश्च साधने॥२॥

भैरव ने कहा-हे देवि! सम्पूर्ण अभीष्ट फल को देने वाले, आद्यामहाविद्या के कवच का निरुपण करता हूँ, उसे सावधानपूर्वक सुनो।१॥ हे देवि! इस कवच के सदाशिव ऋषि, अनुष्टुप् छन्द,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐंकारः पातु शीर्षे मां कामबीजं तथा हृदि।
रमाबीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः॥३॥
ललाटे सुन्दरी पातु उग्रा मां कण्ठदेशतः।
भगमालां सर्वगात्रे लिंगे चैतन्यरूपिणी॥४॥

महाविद्या देवता, धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की सिद्धि के लिए हाथ में जल लेकर विनियोग करें॥२॥ ऐंकार मेरे मस्तक (सिर) की, कामबीज हृदय की, नाभि, गुप्तांग एवं दोनों चरणों की रमाबीज रक्षा करें॥३॥

सुन्दरी मेरे ललाट की, उग्रा मेरे कण्ठ की, समस्त शरीर की भगमाला तथा चैतन्य रुपिणी मेरे लिंग की रक्षा करें॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूर्वे मां पातु वाराही ब्रह्माणी दक्षिणे तथा।
उत्तरे वैष्णवी पातु चेन्द्राणी पश्चिमेऽवतु॥५॥
माहेश्वरी च आग्नेय्यां नैर्ऋते कमला तथा।
वायव्यां पातु कौमारी चामुण्डा हीशकेऽवतु॥६॥

इसी प्रकार पूर्व दिशा में वाराही, दक्षिण में ब्रह्माणी, उत्तर दिशा में वैष्णवी एवं पश्चिम में इन्द्राणी मेरी रक्षा करें॥५॥ आग्नेय दिशा में माहश्वेरी, नैऋत्य (नैऋतिकोण) में कमला, वायव्य में कौमारी तथा ईशान में चामुण्डा मेरी रक्षा करें॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इदं कवचमज्ञात्वा महाविद्यां च यो जपेत्।
न फलं जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि॥७॥

फलश्रुति-न्यास-ध्यान सहित इस कवच पाठ के बिना जो साधक आद्या महाविद्या का जप करता है, उसकी सिद्धि सैकड़ों एवं करोड़ों वर्ष में भी नहीं होती है॥७॥

॥ इस प्रकार हिन्दी-टीका सहित रुद्रयामल तन्त्रोक्त महाविद्याकवच समाप्त ॥

सम्पूर्ण पूजन रहस्य, ग्रह नक्षत्र शांति रहस्य, अत्येष्टि कर्म रहस्य, षोड़ष संस्कार रहस्य, शिवार्चन रहस्य, रुद्राष्टाध्यायी, वृहद कवच संग्रह, चालीसा पाठ संग्रह आदि पुस्तकें मंगाकर पढ़े।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रेतबाधा निवारण के लिए कुछ अनुभूत मन्त्र

ॐ दक्षिणमुखाय पञ्चमुखहनुमते करालवदनाय नारसिंहाय ॐ हां हीं ह्रूं हौ हः सकल-भूत-प्रेत-दमनाय स्वाहा।

प्रयोग-विधि-इस मन्त्र को श्रद्धा-विश्वास पूर्वक हनुमान् जी के मंदिर में अथवा घर पर ही एकान्त स्थान में हनुमानजी का फोटो सामने रखकर गन्ध, पुष्प, धूप एवं दीपादि पञ्चोपचार से पूजन कर, कम- से-कम दस हजार जप कर लेने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र-जप पूरा हो जाने पर अष्टगन्ध से दशांश हवन करना चाहिए।

सम्पूर्ण नृसिंह रहस्य-ले०-पं० शिवस्वरूप यज्ञिक

भगवान नृसिंह भगवान की पूजा का पूरा विधान दिया गया है। मू०-40/-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शत्रु-संकटनिवारण के लिए मन्त्र

ॐ पूर्वकपिमुखाय पञ्चमुखहनुमते टं टं टं टं टं सकलशत्रु-संहरणाय स्वाहा।

विधि-यह मन्त्र पन्द्रह हजार जप कर लेने से सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर शत्रु-भय दूर हो जाता है। मन्त्र-सिद्धि के पश्चात् हनुमान्‌जी के समक्ष दशांश हवन भी करना चाहिए।

सम्पूर्ण हवन रहस्य भाषा टीका लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में पंचगव्य निर्माण, आचार्यवरण, रक्षा विधान, यज्ञकुण्ड पूजन, पंचभू संस्कार, अग्नि पूजन, हवन संकल्प, पंच वारुण होम, नवग्रह होम, अधिप्रत्याधि, पंचलोकपाल, दशदिक्पाल होम, वास्तु होम, सोडश स्तंभ होम, सर्वतोभद्र, लिंगतोभद्र, योगिनी, क्षेत्रपाल, विष्णुयाग (विष्णु सहस्त्रनाम), गायत्री याग (गायत्री सहस्त्रनाम), रुद्रयाग (रुद्रिपाठ सहित), दुर्गा याग (याग विधान), पुरुष सूक्त, रुद्रसूक्त, श्रीसूक्त, हवन तथा न्यास सहित, उत्तर पूजन, स्विष्ट कृद्धोम, बलिदान, पूर्णाहूति, आरती, तर्पण, मार्जन, गोदान, अभिषेक मंत्र आदि दिये गयें हैं। इस पुस्तक को आज ही मंगाये। मूल्य ५०/-रु०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूत-प्रेतादि नाश एवं महामारी तथा समस्त अनिष्ट ग्रह-शान्ति के लिए

ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं हौं हः ॐ नमो भगवते महाबलपराक्रमायभूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-शाकिनी-डाकिनी-यक्षिणी-पूतना-मारी-महामारी-राक्षस-भैरव-वेतालग्रह-राक्षसादिकान् क्षणेन हन हन भञ्जय भञ्जच मारय मारय शिक्षय शिक्षय महामाहेश्वररुद्रावतार ॐ हं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्वजनदुष्टजनमुखस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ हां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ह्रीं ह्रं ठं ठं ठं फट् स्वाहा।

विधि–मंगलवार को दिन भर व्रत रहकर हनुमान्जी के मंदिर में यह मन्त्र सात हजार जप करने से सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद हनुमान्जी के समक्ष जप का दशांश हवन भी करना चाहिए।

विशेष– उपर्युक्त मन्त्रों में–से जिस मन्त्र की सिद्धि करनी हो उसे भोजपत्र पर लाल चन्दन से लिखकर उस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित कर ताबीज में भरकर धारण कर लेने से यह रामबाण सिद्ध होता है।

बटुक भैरव स्तोत्र हिन्दी टीका सहित मू०–10 रु० दुगा कवच 10/-
हनुमान कवच मूल्य 10 रु० काली कवचन मूल्य 10/-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिह्वाया अग्रे मधुसे जिह्वामूले मधूलकम्।
ममदेह कृतावसो मम चित्तमपुपायसि।

मेरी जिह्वा के अग्रभाग में माधुर्य हो। मेरी जिह्वा के मूल में मधुरता हो। मेरे कर्म में मांधुर्य का निवास हो और हे माधुर्य! मेरे हृदय तक पहुंचे।

सन्तोषामृततृप्तानां सुखं शन्तिरेव च।

सन्तोष रूपी अमृत से सन्तुष्ट हुए व्यक्ति के लिए सर्वत्र सुख और शान्ति ही है।

स हि सत्यो यं पूर्वेचिद् देवासश्चिद्यमीधिरे।
होतारं मन्द्रजिह्वामित्सुदीतिभिर्विभवसुम्।।

सत्य वही है जो उज्जवल है, वाणी को प्रसन्न करता है और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिसे पूर्वकाल में हुए विद्वान उज्जवल प्रकाश से प्रकाशित करते हैं।

उदिते परमानन्दे नाहं न त्वं न वे जगत्

हृदय में परमानन्द के उदय होने पर अपना पराया नहीं रह पाता।

सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य व पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभ॥

हे राजन्! निरन्तर प्रिय बोलने वाले मनुष्य तो सुलभ हैं किन्तु अप्रिय और हितकारी वचन बोलने वाले और सुनने वाले दुर्लभ हैं।

किं कुलेन विशालेन विद्याहीनेन देहिनाम्।

व्यक्ति अगर विद्या से रहित है तो कुल का बड़प्पन कैसा?

न श्वः श्वमुपासीन को हि मनुष्यस्य श्वो वेद।

कल के ऊपर कोई कार्य नहीं छोड़े, क्योंकि मनुष्य के कल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

को कौन जानता है।

आचार्यो ब्राह्मणो मूर्तिः पिता मूर्तिः प्रजापतेः।
माताः पृथिव्याः मूर्तिस्तु भ्राता स्वो मूर्तिरात्मनः॥

आचार्य ब्रह्मा की मूर्ति हैं। पिता प्रजापति की मूर्ति है। माता पृथ्वी स्वरूपा है और भाई स्वयं अपनी ही मूर्ति है।

सर्वेषु भूतेषु दया हि धर्मः।

सब प्राणियों पर दया करना ही धर्म है।

बहु कृत्वापि मन्यन्ते स्वल्पमेव महाशयाः।

अच्छे लोग भलाई करते हुए अपना स्वार्थ नहीं देखते।

सोऽर्थो यो हस्ते तन्मित्रं यन्निरन्तरं व्यसने।
तद्रूपं यत्र गुणास्तद्विज्ञानं यत्र धर्मः॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धन वही है जो हाथ में है, मित्र वही है जो आपत्ति में निरन्तर साथ रहे, रूप वही है जिसमें गुण विद्यमान हो और विज्ञान वही है जिसमें धर्म रहे।

भक्तजनों से निवेदन

इस कलिकाल में महाविद्या स्तोत्र का पाठ सर्व फलदायक होने के साथ मुक्तिदायक भी है। नित्य पाठ से जो आनन्द की अनुभूति होती है, वह पाठ करने वाले भली प्रकार जानते हैं। किसी भी सत्य कार्य में सहायता देना भी भक्ति का अंग है। इस पुस्तक दान भी उत्तम परमार्थ है। धन के दान की अपेक्षा इस पुस्तक का दान कई गुना उत्तम है। १०१ या अधिक महाविद्या स्तोत्र पुस्तक नि:शुल्क वितरण के लिए लेने पर पुस्तक का लागत मात्र मूल्य लिया जाता है। विशेष जानकारी के लिए निम्न पते पर लिखें।

कर्मसिंह अमरसिंह पुस्तक विक्रेता
बड़ा बाजार हरिद्वार-249401 फोन-01334-225619

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सप्रेम भेंटकर्ता:-

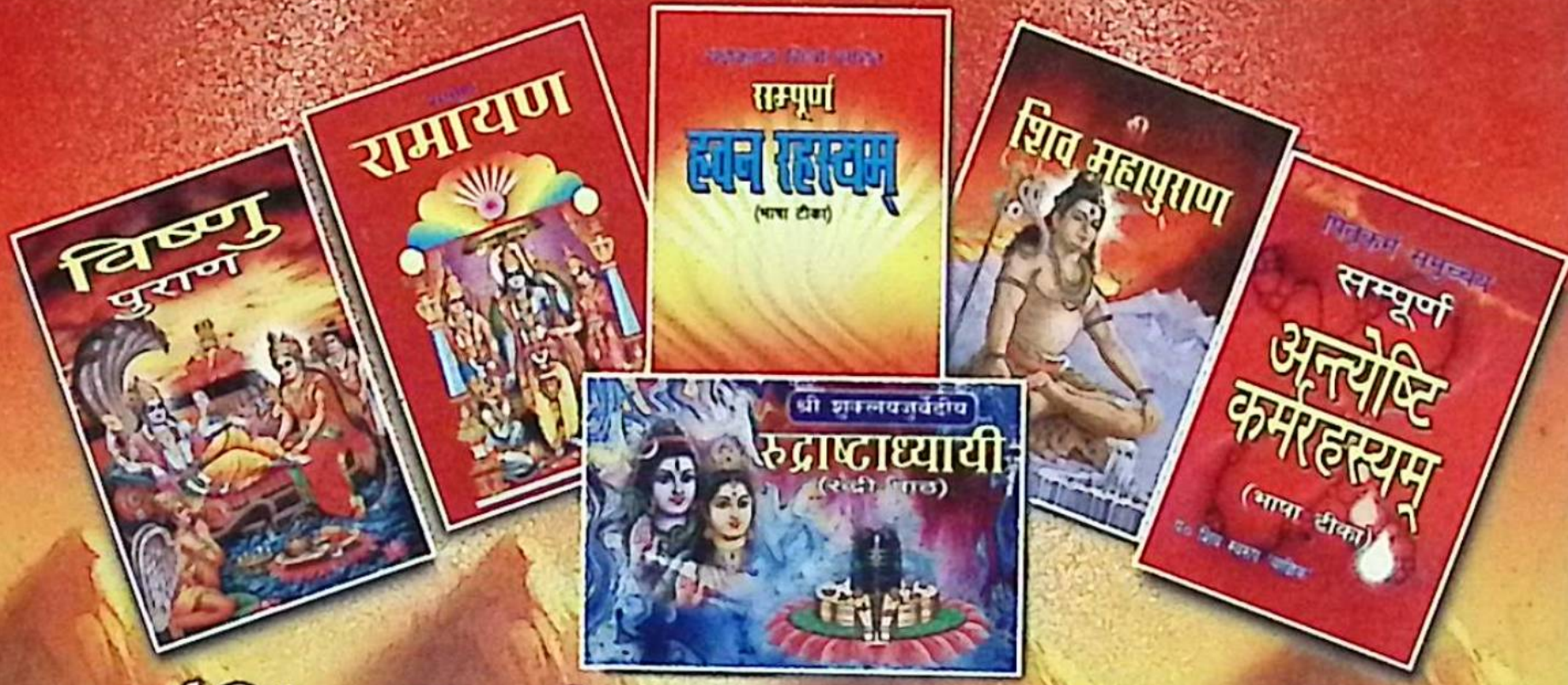

कर्मसिंह, अमरसिंह पुस्तक विक्रेता, हरिद्वार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection